International Journal in Management and Social Science
Volume 11 Issue 02,Feb 2023 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 7.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

शिशुपाल वध: एक दृष्टि

डॉ. आदर्श किशोर

सह आचार्य (हिंदी)

राजकीय महाविद्यालय, बाड़मेर

सुप्रसिद्ध महाकाव्य 'ि ा ुपाल वध' के रचयिता माघ की जन्म स्थली भीनमाल थी। उनके पितामाह सुप्रभदेव 625 ईस्वी के आस–पास भीनमाल पर भाासन करने वाले राजा वर्मलात के प्रधानमंत्री थे। ''इसकी पुश्टि बसंतगढ़ की क्षेमंकरी माता मन्दिर के 625 ई. के ि ालालेख से होती है''[1] उनके पुत्र दत्तक हुए, जो अत्यन्त उदार तथा सभी को आश्रय देने के कारण 'सर्वाश्रय' उपाधि से अलंकृत हुए। इन्हीं दत्तक के पुत्र माघ हुए। माघ के समय–निरूपण में बड़ा मतभेद है। कोई उन्हें सातवीं भाताब्दी के उत्तरार्द्ध में मानता है तो कोई आठवीं भाताब्दी के मध्य में।

माघ के स्थितिकाल की दृश्टि से विद्वानों ने ''ि ा ुपाल वध'' के द्वितीय सर्ग इस भलोक को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है :–

'अनुत्सूत्रपदन्यासा सद्वृत्तिः सत्रिबन्धना।

भाब्दविधेव नो भाति राजनीतिरपस्प ाः।।

इस भलोक में 'काि ाकावृत्ति' और 'न्यास' नामक दो व्याकरण ग्रन्थों की ओर स्पश्ट संकेत किया गया है। मल्लिनाथ और वल्लभदेव दोनों टीकाकारों ने इस संकेत का स्पश्ट उल्लेख किया है। 'काि ाकावृत्ति' की रचना वामन और ज्यादित्य ने 650 ई. में की थी। अतः यह नि ि चत है कि माघ इस समय के बाद ही हुए होंगे। किन्तु उक्त भलोक में 'न्यास' भाब्द से जिस ग्रन्थ–वि ोश की ओर संकेत है, इस विशय में विद्वानों का मतभेद है। पाठक महोदय का कहना है कि उक्त 'न्यास' से अभिप्राय 'काि ाकावृत्ति' की जिनेन्द्रबुद्धि–रचित 'न्यास' नामक टीका से है, जिसकी रचना लगभग 700 ई. में हुई। उनके मतानुसार माघ का समय इस आधार पर 750 ई. के आस पास सिद्ध होता है। यह कहना उचित नहीं है कि माघ उक्ल भलोक में जिनेन्द्रबुद्धि के ही 'न्यास' ग्रन्थ की ओर संकेत कर रहे है। जिनेन्द्रबुद्धि के पहले भी 'न्यास' नामक ग्रन्थों की रचना हो चुकी थी।

काणे महोदय ने दिखाया कि बाण ने अपने 'हर्शचरित' में 'न्यास' का उल्लेख किया है (कृतगुरूपदन्यासा लोक इव व्याकरणेऽपि)। सम्भव है कि बाण के समान माघ ने भी इसी 'न्यास' की ओर संकेत किया हो, न कि जिनेन्द्रबुद्धि के 'न्यास' की ओर। अतः माघ का समय जिनेन्द्रबुद्धि के पीछे नहीं माना जा सकता और सम्भवतः वे सातवीं भाताब्दी के उत्तरार्द्ध में ही हुए थे।''[3]

राजस्थान के बसन्तगढ़ के आधार पर माघ का समय 675 ई. से 700 ई. के बीच मान लेना युक्ति–संगत ही है।

कहा जाता है कि जब माघ का जन्म हुआ तब उनके पिता ने माघ की जन्म कुण्डली देखकर पता लगाया कि माघ की आयु चौरासी वर्श की होगी तथा अन्तिम समय में पैरों में सूजन आने से निधन होगा। पिता ने एक मोतियों का हार अलग से पुत्र के लिये रखवा दिया कि यदि पुत्र अपव्ययी होगा तब भी प्रतिदिन का उसका व्यय इस मोतियों के हार से निकल जायेगा। माघ ने बड़े होकर कविता लिखना आरम्भ किया तथा अपनी कविता

पिता को दिखाई। पिता ने कहा 'पूर्व के कवियों के सामने तुम्हारी कविता कुछ भी नहीं''। एक बार माघ ने 'ि ा ुपाल वध' की रचना की और उसे चूल्हे के धुए से धूसरित कर पिता को यह कहकर दिखाई कि यह किसी कवि के प्राचीन कविता है। पिता ने रचना को सराहते हुए कहा–तुम्हें भी ऐसी ही कविता रचनी चाहिए।''

माघ ने पिता को बताया कि यह तो उसी की कविता है तो पिता बड़े क्रोधिक हुए और बोले 'मेरे साथ छल किया, तुम्हारी कविता की सामर्थ्य अब इससे अधिक नहीं बढ़ेगी।''[4]

माघ के महाकाव्य 'ि ा ुपाल वध' की गणना 'बुहत्त्रयी' में होती है। 'ि ा ुपाल वध' को छोड़कर माघ की किसी अन्य रचना का अभी तक पता नहीं लगा है। सूक्ति–संग्रहों में अव य कई एक ऐसे पद्य माघ के नाम से दिये गये है, जो 'ि ा ुपाल वध' में नहीं मिलते। सम्भव है कि माघ की और भी कोई रचना रही हो जो अब उपलब्ध नहीं होती।

'ि ा ुपालवध' महाकाव्य में 20 सर्ग और 1650 भलोक हैं जिनमें युधिश्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृश्ण के द्वारा उद्धत ि ा ुपाल के वध की घटना मुख्य है। इसकी कथावस्तु महाभारत के सभापर्व से ग्रहण की गई है। श्रीमद् भागवत ने भी यह कथा अत्यन्त सूक्ष्म रूप में प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त पद्मपुराण विश्णु पुराण एवं ब्रह्मवैवर्त पुराण में भी यह कथा संक्षेप में वर्णित है। माघ ने अनेक स्थलों पर मौलिक परिवर्तन भी किए है।

ि ा ुपाल वध महाकाव्य की कथा सर्गानुसार इस प्रकार है –

सर्ग 1 में आका ामार्ग से नारद पृथिवी पर श्रीकृश्ण के सम्मुख उतरते हैं। कृश्ण अहर्यदान के प चात् नारद के आने का प्रयोजन पूछते हैं। नारद् ि ा ुपाल के गर्व एवं अत्याचारों से पीड़ित संसार और इन्द्र के भय का वर्णन करके श्रीकृश्ण से प्रार्थना करते है कि वे ि ा ुपाल का वध करें। श्रीकृश्ण वचन देते है। सर्ग 2 में सभागृह में बलराम, श्रीकृश्ण एवं उद्धव मन्त्रणा करने के लिये प्रविश्ट होते हैं। वहाँ युधिश्टर की ओर से

राजसूय यज्ञ में सम्मिलित होने का निमन्त्रण प्राप्त होता है। दो कार्यो में से प्रथम क्या करणीय है ? इस वाद विवादु को उद्धव अपने राजनीति कौ ालपूर्ण वचनों से समाप्त कर देते है और राजसूय यज्ञ में ही ि ा ुपाल के अपमान और वध की युक्ति सोच कर सभी राजसूय यज्ञ में इन्द्रप्रस्थ आने की तैयारी करते हैं।

सर्ग 3 में द्वारका व समुद्र का वर्णन, सर्ग 4 में रैवतक पर्वत का वर्णन व सर्ग 6 में ाडऋतुओं का वर्णन, सर्ग 8 में जल क्रीडा का वर्णन सर्ग 10 में पान गोश्ठी व सर्ग 11 में प्रभात वर्णन प्रमुख है। सर्ग 14 में युधिश्ठिर अग्रपूजा करके श्रीकृश्ण के प्रति सम्मान प्रगट करते है। सर्ग 15 में अग्रपूजा से रूश्ट होकर ि ा ुपाल कृश्ण, युधिश्ठिर एवं भीश्म को दुर्वचन सुनाता है। सर्ग 16 में ि ा ुपाल का दूत आकर द्वयर्थक संदे ा सुनाता है कि या तो कृश्ण ि ा ुपाल की अधीनता माने या मरने को तत्पर हों। सर्ग 17 से 20 में सेनाओं का पारस्परिक युद्व तथ श्री कृश्ण एवं ि ा ुपाल का द्वन्द्वयुद्ध होता है। अन्त में श्री कृश्ण अपने सुद ार्शन चक्र से ि ा ुपाल का सिर काट देते है और ि ा ुपाल के भारीर से एक तेज निकल कर कृश्ण के भारीर में प्रविश्ट हो जाता है तथा महाकाव्य समाप्त हो जाता हैं।

कथानिर्वाह –महाकाव्य का प्रारम्भ 'श्री' एवं वस्तुनिर्दे ात्मक मंगलाचरण से होता है। 'ि ा ुपाल वध' श्रयन्त महाकाव्य' कहलाता है, क्योंकि प्रत्येक सर्ग के अन्त 'श्री' भाब्द का प्रयोग है। महाभारतदि से गृहीत इस संक्षिप्त कथानक को माघ ने महाकाव्योपयोगी विभिन्न वर्णनों से अलंकृत करके अत्यन्त विस्तृत कर दिया है। इतिवृत्त संयोजन और प्रांसगिक वर्णनों से सामन्जस्य से महाकाव्य में जो एक अद्भूत आकर्शण उत्पन्न होता है वह माघ काव्य में प्राप्त नहीं होता।

संवाद योजना–'ि ा ुपाल वध' सात्यकि–दूत संवाद, नारद–कृश्ण संवाद बलराम–उद्धव संवाद प्रमुख हैं। संवाद बड़े ही सरल एवं ओजपूर्ण हैं।

रस – 'ि ा ुपाल वध' का मुख्य रस वीर रस है। तथा श्रृंगार, रौद्र, भयानक, हास्य आदि रस इसमें अंग रूप में सक्षिविश्ट है। इस काव्य में वीर रस का सन्निबन्धन नायक श्री कृश्ण प्रतिनायक ि ा ुपाल एवं दोनों सेनाओं के युद्ध के माध्यम से किया गया है।

"रोशावे ादाभिमुख्येन कौचित्याणिग्राहं रंहसैवोययातौ।

हित्वा हेतीर्मल्लवंमुश्टिध्नातं बाहबाहविव्यासजेताम्।।"

सातवें से बारहवें सर्ग एक श्रृंगार रस की प्रधानता रही है।

प्रकृति चित्रण – ''माघ ने प्रकृति अत्यन्त अलंकृत एवं सजीव वर्णन किया है। समुद्र, सरिता, वन, वृक्ष पर्वत मेघ सूर्योदय सूर्यास्त चन्द्रोदय ऋतुचक्र जलक्रीड़ा आदि प्राकृतिक दृ यों का स्वाभाविक एवं सुन्दर वर्णन हुआ हैं। प्राची दि ा में उदित होते हुए सहस्ररि म का वर्णन सूर्योदय के दृ य को अविस्मरणीय बना रहा है।

"विततपृथवरत्रा तुल्यरूपैर्मयूखैः कल ा इस गरीयान् दिग्भिराकृश्यमाणः।

कृतचपलहिंगालापकोलाहलभिर्जलनिधिजलमध्यादेश उत्तार्यतेऽर्कः।।[6]

भाशा – माघ का संस्कृत भाशा पर पूरा अधिकार है। नवीन भाब्दावली का तो उनका काव्य आगार ही है। संस्कृत समालोचकों ने तो यहां तक कह डाला है कि प्रथम नौ सर्गो में माघ ने संस्कृत भाब्दों का खजाना खाली कर दिया है –

'नवसर्गगते माघे नव ाब्दों न विद्यते।" उनकी भाशा

परिश्कृत, लालित्यपूर्ण एवं प्रवाहमयी हैं।

अंलकार योजना–माघ ने विविध भाब्दालंकारों और अर्थालंकारों से 'ि ा ुपाल वध' को सर्वतः अलंकृत किया है। सम्पूर्ण उन्नीसवां सर्ग विविध काव्यबन्धों के कारण चित्रकाव्य का

रूप प्रस्तुत करता है। चित्रांलकारों के भेदोपभेदों के प्रयोग में अपनी वि ोशतज्ञता की पराकाश्ठा कर दी है।

छन्द योजना–माघ ने वं ास्य, अनुश्टुप् उपजाति वसन्ततिलका आदि छन्दों का प्रयोग करते हैं। एक ही चतुर्थ सर्ग में आर्या, पृथिवी, हरिणी ि ाखरिणी, मन्दाक्रान्ता, भाार्दुलविक्रड़ित, स्रग्धरा आदि 20 छन्दों का प्रयोग करके अपनी निपुणता दिखाई है।

''माघ का सम्पूर्ण काव्य प्रौढ़ एवं उदात्त ौली का उत्कृश्ण उदाहरण है।[6] अलंकारवादी भौली, ओज एवं माधुर्य गुण की प्रचुरता है।

माघ की कविता में प्रतिभा की अपेक्षा पांडिव्य का प्राधान्य है। सर्ग 2 में भाास्त्रीय ज्ञान का चरमोत्कर्श है। जैसे वेद व्याकरण ज्योतिश काव्य ाास्त्र द ान राजनीति नीति ाास्त्र संगीत आदि।

'माघे सन्ति त्रयोगुणाः उक्ति प्रचलित है। उपमा, अर्थगौरव तथा पदलालित्य ये तीनों गुण माघ की कविता में मिलते है। ''रैवतक पर्वत की हाथी से एवं उसके दोनों ओर सूर्य चन्द्र की उपमा रखते हुए घण्टों से देने के कारण महाकवि माघ को 'घण्टा माघ' कहा जाता है।[7]

माघ में मौलिकता की कमी है, उनके काव्य का आद ा किरातार्जुनीय है। भाव और भाशा दोनों में भारवि की छाया स्पश्ट देखी जा सकती है

माघ के पांडिव्य एवं प्रतिभा से प्रभावित होकर राज ोखर प्र ांसा करते हैं –

कृत्स्नप्रबोधकृद्वाणी भारवेरिव भाखेः।

माधेनेव च माधेन कम्पः कस्य न जायते।।

'जहाँ भारवि की कविता सूर्य–किरणों की भांति समग्र ज्ञान को प्रकाि ात करने वाली है, वहाँ माघ मास के समान माघ का नाम सुनकर किस कवि को कँपकँपी नहीं बंध जाती।।'

मौलिक प्रकृति चित्रण, सुन्दर अलंकार प्रयोग, नूतन पद भाय्या, गम्भीर अर्थगौरव, विलक्षण पाणित्य रसोन्मेशकारी कला वर्णनवैचित्र्यद्व दूरगामी कल्पना आदि गुणों से परिपूर्ण माघकाव्य को देखकर अन्य काव्यरचना तत्पर कवियों की उत्साहहीनता का वर्णन धनपाल ने अत्यन्त सुन्दर रीति से किया है –

माघेन विध्नितोत्साहा नोत्सहन्ते पदक्रमे।

स्मरन्तो भा रवेरेव कवयः कपयो यथा।।

अर्थात् 'जिस प्रकार सूर्य के आतप को याद करके भी बन्दर माघ मास की ठण्डक से उत्साह रहित होकर उछलकूद नहीं कर पाते, वैसे ही भारविकाव्य को स्मरण रखते हुए भी माघ की काव्य रचना के सम्मुख कविगण पदयोजना करने में अनुत्साहित रहते हैं।

वैदुश्य और पाण्डित्य के कारण परवर्ती आलोचकों ने माघ को भारवि की अपेक्षा अधिक श्रेश्ठ कवि घोशित किया–

''तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. सोहनलाल पाटवी, जालोर एवं स्वर्णगिरि दुर्ग का सांस्कृतिक इतिहास पृश्ठ 50
2. पाण्डेय एवं व्यास, संस्कृत साहित्य की रूपेरखा पृश्ठ 54

3. वही पृश्ठ 55
4. मोहनलाल गुप्ता, जालोर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास पृश्ठ 209
5. डॉ. प्रीति प्रभा गोयल, संस्कृत का इतिहास पृश्ठ 110
6. प्रो. कैला ानाथ द्विवेदी, संस्कृत साहित्य का इतिहास पृश्ठ 48
7. डॉ. राके ा कुमार जैन एवं मनमोहन भार्मा, संस्कृत साहित्य का इतिहास पृश्ठ 112

डॉ. आदर्श किशोर

सह आचार्य (हिंदी)

राजकीय महाविद्यालय, बाड़मेर